REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

सतत् विकास लक्ष्य एवं चुनौतियां

डॉ. श्रीमती संजू पाण्डेय[1] , डॉ. प्रवीण कुमार पाण्डेय[2]
[1]सहायक प्राध्यापक(अर्थशास्त्र) , शास. निरंजन केशरवानी महाविद्यालय,
कोटा जिला– बिलासपुर (छ.ग.)

विकास एक निरंतर परिवर्तन, गतिशील, जटिल एवं बहुआयामी, संकल्पना है विकास एक सतत् प्रक्रिया है जो मानव अपने उद्‌भव के प्रारंभिक काल से करता आया है। उसी के परिणाम स्वरूप आज प्रगति के उच्च शिखर पर है। इसमें आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, राजनैतिक विकास एवं तकनीकी विकास समाहित है।

आर्थिक विकासः– से तात्पर्य हे आर्थिक समृद्धि उत्पादन व जीवन स्तर में वृद्धि अर्थव्यवस्था का प्राथमिक से द्वितीयक या तृतीयक रूपांतरण और अर्थव्यवस्था की उच्च विकास दर में होता है।

सामाजिक विकासः– समाज में शिक्षा साक्षरता अधिकार बोध, जीवन की सुविधाओं और गुणवत्ता में वृद्धि से होता है।

राजनैतिक विकासः– बढ़ती जनसहभागिता, विकेन्द्रीयकरण, मानवाधिकार संरक्षण एवं नीति निर्माण में स्थानीय समुदायों की भागीदारी विकास के अंतर्गत आते है।

तकनीकी विकासः– समाज में कई तकनीकों का बढ़ना जैसे– सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का अत्याधिक प्रचन ही विकास माना जाता है। इस सबके सम्मिलित प्रयास से विकास संभव होता है। यू.एन.डी.पी. की परिभाषा के अनुसार '' दीर्घ तथा स्वस्थ्य जीवन, ज्ञानवान होना, एक संतोषजनक जीवन स्तर के लिए उपलब्ध पर्याप्त साधन तथा सामाजिक जीवन में भागीदारी को योग्यता ही विकास है।

सतत् विकास का परिचय
(Introduction of sustainable Development)

निरंतर विकास मानव की प्रवृत्ति है और पर्यावरण जीवन का स्त्रोत है, मानव की इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप वह विकास के वर्तमान स्तर तक पहुँच पाया है। इस विकास यात्रा में वह पर्यावरण का सतत् उपयोग करता है और जैसा की पूर्ववर्ती विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रत्येक विकास की चरण का पर्यावरण पर भी प्रभाव पड़ता है।जब तक की यह प्रभाव सीमित अथवा सामान्य होता है उससे पारिस्थितिक तंत्र पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु जब यह अधिक सघन एवं विस्तृत होने लगता है तो पर्यावरण में विकृतियां उत्पन्न होने लगती है और उसका दुषप्रभाव सम्पूर्ण जीव–जगत पर होता है।

सतत् विकास की अवधारणाः– पर्यावरण एवं विकास पर 1987 में विश्व आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट **(Our common Future)**''हमारा सम्मिलित भविष्य'' के अनुसार सतत् विकास उसे कहते है जिससे भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने की योग्यता से कोई समझौता किये बगैर अपनी वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। सतत् विकास वास्तव में साधन संपन्न लोगों की तुलना में साधनहीन लोगों तथा वर्तमान पीढ़ी से अधिक भावी पीढ़ी को अधिक महत्व देता है।'' सतत् विकास'' संसाधनों का उपयोग करने का एक आदर्श माडल है जो यह बताता है कि विकास के साथ–साथ पर्यावरण को भी सुरक्षित करना है । इसका उद्देश्य है– ''वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए इस प्रकार प्रयोग कराना ताकि प्राकृतिक संसाधनों का न्यूनतम क्षरण हो''।

संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार ''सतत् विकास एक ऐसी विकास की नीति है जो हमारे वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही साथ भविष्य के साथ बिना समझौता किये अगली पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमताओं सुरक्षित रखें।''

सतत् विकास का लक्ष्यः–

1. शून्य गरीबी (Zero Poverty)

उद्देश्य– गरीबी का हर रूप में हर जगह उन्मूलन।

चुनौती – आज दुनिया भर में 80 करोड़ लोग विकट गरीबी की हालत में जी रहे है। हर 5 में से 1 व्यक्ति प्रतिदिन 1.25 अमेरिकी डॉलर से भी कम में गुजारा कर रहा है। ऐसे में निपट गरीबी हमारे दौर का एक सबसे तात्कालिक संकट बन गई है।

2. शून्य भूखमरी (Zero Hunger)

उद्देश्य– शून्य भूखमरी, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण हासिल करना तथा सतत् खेती को प्रोत्साहन।

चुनौती– दुनिया में हर व्यक्ति को पेट भरने लायक पर्याप्त भोजन होने के बावजूद आज हर 9 में से 1 व्यक्ति भूखा रहता है। अगर हमने दुनिया की आहार और कृषि व्यवस्था के बारे में गहराई से नई सीरे से नहीं सोचा तो अनुमान है कि 2050 तक दुनियाभर में भुख के शिकार लोगों की संख्या 2 अरब तक पहुचँ जायेगी।

3. उत्तम स्वास्थ्य और खु□हाली (Good Health Well Being)

उद्देश्य– उत्तम स्वास्थ्य सुनिश्चित करना, हर उम्र में सबकी खुशहाली को प्रोत्साहन।

चुनौती– वैश्विक प्रगति के बावजूद सहारा के दक्षिणी अफ्रीकी देशों और दक्षिणी एशिया क्षेत्रों में शिशु मौतों का अनुपात बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2009 के बाद से विश्व में एच.आई.वी/एड्स, मलेरिया और टी.बी. सहित प्रमुख संक्रामक रोगों का होना कम हुआ है लेकिन विश्व के अनेक क्षेत्रों में ये बीमारियां और नई महामारियां अब भी बड़ी चुनौतियाँ है।

4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (Quality Education)

उद्देश्य– समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना तथा सबके लिए आजीवन सीखने के अवसरों को प्रोत्साहन

चुनौती– दुनिया भर में देशों के सभी स्तरों पर शिक्षा की सुलभता बढ़ाने और स्कूलो में भी भर्ती की दरों में वृद्धि करने में बहुत प्रगति की है तथा बुनियादी कौशल में भी जबरदस्त सुधार हुआ है। 15–24 की आयु के युवा वर्ग में दुनिया भर में 1990 से 2015 के बीच साक्षरता सुधरी है। यह दर 83 प्रतिशत से बढ़कर 91 प्रतिशत हो गई है। प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा पूरी करने वाले बच्चों की दरों भी 2013 तक 90 प्रतिशत तक को पार गई। इन तमाम सफलताओं के बावजूद अनेक कमियां बाकी है। गिने–चुने देशों ने ही शिक्षा के सभी स्तरों पर जैन्डर समानता हासिल की है। इसके अलावा 5.7 करोड़ बच्चें अब भी स्कूलों से बाहर है और इनमें से आधे सहारा के दक्षिणी अफ्रीकी देशों में रहते है।

5. लैंगिग समानता (Gender Equality)

उद्देश्य– लैंगिग समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।

चुनौती– दुनिया के हर हिस्से में महिलाएं और लड़कियां आज भी भेदभाव और हिंसा झेल रही है। हर क्षेत्र में लैंगिक समानता के मामले में कमियां मौजूद है। दक्षिण एशिया में 1990 में प्राइमरी स्कूलों में हर सौर लड़कों पर चौहत्तर लड़कियां भर्ती होती थी, लेकिन 2012 तक भी भर्ती का अनुपात वहीं था। 155 देशों में कम से कम एक कानून मौजूद है, जो महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों में बाधक है। अधिकांश देशों में महिलाएं, पूरूषों को मिलने वाले वेतन की तुलना में औसतन सिर्फ 60 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक ही कमा पाती है। सभी देशों की संसदों में केवल 22.8 प्रतिशत महिला सांसद है। हर 3 में से 1 महिला अपने जीवन काल में किसी न किसी प्रकार की शारीरिक अथवा यौन हिंसा की शिकार होती है।

6. स्वच्छ जल और स्वच्छता (Clean Water and Sanitation)

उद्देश्य–सभी के लिए स्वच्छ और स्वच्छता के लिए सतत प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

चुनौती– दुनिया भर में 2.5 अरब लोग बुनियादी स्वच्छता से वंचित है एवं 80 करोड़ लोगों को जल सुलभ नहीं है। दुनिया में 3 प्रतिशत से भी कम पानी ताजा यानी पीने लायक हैं।

7. सस्ती और प्रदूषण मुक्त ऊर्जा (Affordable and Clean Energy)

उद्देश्य– सस्ती विश्वसनीय, सतत और आधुनिक ऊर्जा सुलभता सुनिश्चित करना।

चुनौती– वृद्धि के इंजन को इंधन दिये बिना विकास नहीं हो सकता । ऊर्जा जरूरी है और ऊर्जाकी सतत सुलभता से वंचित लोग राष्ट्र और विश्व की प्रगति में हिंसा लेने के अवसर से वंचित रह जाते है, फिर भी दुनियाभर में 1अरब लोगों को ऊर्जा सुलभ नही है। लगभग 3 अरब लोगों यानी दुनिया के 74.1 प्रतिशत आबादी का स्वच्छ इंधन और रसोई के लिए टेक्नोलाजी सुलभ नही है।

8. उत्कृष्ट कार्य और आर्थिक वृद्धि(Decent Work and Economics)

उद्देश्य– निरंतर समावेशी और सतत् आर्थिक वृद्धि, सबके लिए पूर्ण और उत्पादक रोजगार और उत्कृष्ट कार्य।

चुनौती–दुनिया भर में आर्थिक वृद्धि सन् 2000 में 3 प्रतिशत थी, जो घटकर 2014 में 1.3 प्रतिशत रह गई। दुनिया की करीब आधी आबादी अब भी प्रतिदिन 2 अमेरिकी डॉलर के बराबर राशि में गुजारा कर रही है। वैश्विक बेरोजगारी 2007 में 17 करोड़ युवतियां और युवक है। उत्कृष्ट कार्य अवसरो को निरंतर अभाव/अपर्याप्त निवेश और सामान्य से कम खपत केपरिणाम स्वरूप लोकतांत्रिक समाजों में निहित इस बुनियादी सामाजिक सिद्धांत का क्षय हुआ है। गुणवत्तापुर्ण रोजगार का सृजन लगभग सभी अर्थव्यवस्थाओं के लिए चुनौती है। 2012 में दुनिया भर में 8.5 करोड़ बच्चें खतरनाक प्रकार के काम कर रहे थे।

9. उद्योग, नवाचार व बुनियादी (Industry, Innovation and Infrastructure)

उद्देश्य–जानदार बुनियादी सुविधाओं का निर्माण– समावेशी और टिकाउ औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहन और नवाचार को संरक्षण

चुनौती–औद्योगिक विकास की कहानी राष्ट्रो के सामुदाय के रूप में हमारे इतिहास की महत्वपूर्ण दिशा निर्धारक रही है। पहले भाप इंजन से लेकर पहली असेम्बली लाईन तक और फिर आज कि वास्तव में वैश्विक उत्पादन श्रृखलाओं और प्रक्रियाओं तक उद्योगों ने हमारी अर्थव्यवस्था को बदला है और हमारे समाजों में बड़े बदलाव लाने में मदद किये है किन्तु टिकाउ तौर तरीकों और हमारे समाजों में बुनियादी सुविधाओं की उपस्थिति के अभाव में हमारी वृद्धि ने लोगों के विशाल वर्गो को पीछे छोड़ दिया है। विकासशील देशों में 2.6 अरब लोग दिनभर के लिए बिजली पानी में कठिनाई महसूस करते है 2.5 अरब लाग बुनियादी स्वच्छता से वंचित है, 80 करोड़ लोगों का जल सुलभ नहीं है जिनमें से लाखों लोग सहारा के दक्षिणी अफ्रीकी देशों और दक्षिण एशिया में अनेक निम्न आय वाले देशों के लिए बुनियादी सुविधाओं की मौजूदा सीमाए उत्पादकता और करीब 40 प्रतिशत तक असर डालती है।

10. असमानताओं में कमी (Reduced In Inqualities)

उद्देश्य–देशों के भीतर और उनके बीच असमानताएं कम करना

चुनौती–असमानताएं बढ़ी रही है, 2014 में दुनिया में सबसे अमीर एक प्रतिशत जनसंख्या के पास दुनिया की 48% दौलत थी, जबकि सबसे निचले स्तर पर मौजूद 80% लोगों के पास कुल मिलाकर दुनियां की सिर्फ 6% दौलत थी। यह असंतुलन और भी स्पष्ट हो जाता है, जब हम देखते है कि सिर्फ 80 व्यक्तियों के पास इतनी दौलत है, जितनी दुनिया भर में सबसे कम आय वाले 3.5 अरब लोगों के पास है। औसत आय में असमानता 1990 व 2010 के बीच विकासशील देशों में 11% बढ़ी। जनसंख्या के 75% से अधिक, ऐसे समाजों में जीते है जहाँ आय का वितरण 1990 के दशक की तुलना में और अधिक असमान है। सबसे लाचार देश, सबसे कम विकसीत देश, भूमि से घिरे विकासशील देश गरीबी कम करने की दिशा में आगे बढ़ रहे है। किन्तु इन देशों के भीतर स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाओं तथा अन्य परिसम्पत्तियों की सुलभता में भारी विषमताएं है। देशों के बीच आय में असमानता भले ही कम हुई हो, देशों के भीतर असमानता बढ़ी है।

11. संवहनीय शहर और समुदाय (Sustainable Cities & Communities)

उद्देश्य– शहरों व मानव बस्तियों को सुरक्षित, जानदार और संवहनीय बनाना।

चुनौती– आधा समुदाय यानी 3.5 अरब लोग आज शहरों में रहते है। और अनुमान है कि 2030 में 10 में से 6 व्यक्ति शहरों में निवास होंगे। दुनिया के शहरों ने पृथ्वी की सिर्फ 3 प्रतिशत जमीन घेर रखी है। लेकिन ऊर्जा की कुल खपत 60–80 प्रतिशत और पृथ्वी का 25 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन शहरों में होता है। आनेवाले दशकों में करीब 80 प्रतिशत शहरी विस्तार विकासशील देशोंमें ही तेजी से बढ़ता शहरीकरण, ताजे पानी की आपूर्ति सीवेज रहन सहन के माहोल और जन स्वास्थ्य पर दबाव डाल रहा है। हमारी तेज से फैलती शहरी दुनिया में भीड़ बढ़ रही है, बुनियादी सेवाओं का अभाव है। उपयुक्त आवास की कमी है और बुनियादी ढाचा कमजोर हो रहा है। दुनिया में 30% शहरी जनसंख्या तंग बस्तियों में रहती है और सहारा के दक्षिण के अफ्रीकी देशों में आधे से अधिक शहरी निवासी तंग बस्तियों में रहते है।

12. संवहनीय उपयोग और उत्पादन (Sustainable Consumption & Production)

उद्देश्य–स्थायी खपत एवं उत्पादन तरीकों को सुनिश्चित करना सबसे बड़ी चुनौती है इससे हमारी पृथ्वी भीषण दबाव में है।

चुनौती–हमारी पृथ्वी भीषण दबाव में है। यदि 2050 तक विश्व की जनसंख्या 9.6 अरब तक पहुंचती है तो हमें हर व्यक्ति की मौजूदा जीवन शैली को सहारा देने के लिए तिगुनी पृथ्वी की आवश्यकता होगी। हर वर्ष कुल आहार उत्पादन का लगभग एक–तिहाई अर्थात् 10 खरब अमरीकी डॉलर मूल्य का 1.3 अरब टन आहार उपभोक्ताओं और दुकानदारों के कचरे के डिब्बे में सड़ता है अथवा परिवहन और फसल कटाई के खराब तरीकों के कारण बर्बाद हो जाता है। एक इंसानों की सभी पारिस्थितिकी तथा ताजे पानी की जरूरतों के लिए हमें सिर्फ 0.5 प्रतिशत का ही सहारा है। टैक्नॉलॉजी की उन्नति में ऊर्जा के कुशल इस्तेमाल को बढ़ावा मिला है। इसके बावजूद ओईसीडी देशों में 2020 तक ऊर्जा का उपयोग 35 प्रतिशत और बढ़ जाएगा।

13. जलवायु परिवर्तन (Climate Action)

उद्देश्य–जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करना।

चुनौती–पृथ्वी की जलवायु बदल रही है। जलवायु परिवर्तन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को छिन्न–भिन्न कर रहा है। इस परिवर्तन में सहायक इंसानी गतिविधियों से होने वाला ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन बढ़ता जा रहा है। 1880 से 2012 तक दुनिया के तापमान में औसतन 0.85 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है। इसका असर यह है कि तापमान में हर एक डिग्री की वृद्धि से अनाज की पैदावार करीब 5 प्रतिशत गिर जाती है। 1981 से 2002 के बीच मक्का गेहू और अन्य प्रमुख फसलों की पैदावार में वैश्विक स्तर पर गर्म होते जलवायु के कारण 40 मेगाटन प्रतिवर्ष गिरावट देखी गई है। 1990 से 2010 तक दुनिया में समुद्री जल के स्तर में औसतन 19 से.मी. की वृद्धि हुई है, क्योकि गर्म होते तापमान और हिम के पिघलने से महासागरों का विस्तार हुआ है। CO_2 का वैश्विक उत्सर्जन में वृद्धि 50 प्रतिशत लगभग है। इससे अत्यधिक गर्मी पड़ रही है।

14. जलीव जीवों की सुरक्षा (Life Below Water)

उद्देश्य–जलीय जीवों के सुरक्षा सतत विकास के लिए महासागरों, सागरों संसाधनों का संरक्षण संवहनीय उपयोग

चुनौती–पृथ्वी की सतह के तीन चौथाई हिस्से में महासागर है। जिसमें पृथ्वी का 97 प्रतिशत जल है। 3 अरब सागर से अधिक लोग अपनी आजीविका के लिए समुद्री और जैव विविधता पर निर्भर है। दुनिया भर में समुद्री और तटीय संसाधनों तथा उद्योगों का बाजार मूल्य प्रति वर्ष 3 खरब अमेरिकी डालर वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का करीब 5 प्रतिशत होने का अनुमान है। महानगरों में करीब 2 लाख प्रजातियों की पहचान हो पाई है। पर वास्तविक संख्या लाखों में हो सकती है। इंसान की पैदा हुई करीब 30 प्रतिशत CO_2 महासागर हजम कर जाते है। यानी विश्व की गर्म होती जलवायु का असर कम करती है। वे दुनिया में प्रोटीन के सबसे बड़े स्त्रोत भी है, 3 खरब से अधिक लोगो के लिए प्रोटीन के प्राथमिक स्त्रोत महासागर है। बिना निगरानी के मछली की पकड़ के कारण ही मछली की बहुत सी प्रजातियां तेजी से गायब हो रही है और वैश्विक मछली पालन और उससे जुड़े रोजगार को बचाने और पुराने रूप में वापस लाने के प्रयासों में बाधा पड़ रही है। इसके कारण महासागरों से मछली पकड़े जाने से होने वाली आमदनी हर वर्ष 3 खरब अमेरिकी डाल घट रही है। दुनिया के लगभग 40 प्रतिशत महासागर प्रदूषण, घटती मछलियों तथा तटीय पर्यावास के क्षय सहित इंसानी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित है।

15. थलीय जीवों की सुरक्षा (Life On Land)

उद्देश्य–थलीय जीवों की सुरक्षा थलीय पारिस्थितकीय का संरक्षण, पुर्नजीवन और संवर्धन, वनों का संवहनीय प्रबंधन, मरूस्थलीयकरण का सामना और भूमि क्षय को रोकना तथा ठीक करना और जैव विविधता क्षति को रोकना।

चुनौती–एक प्रजातीय के रूप में हमारा भविष्य हमारे सबसे महत्वपूर्ण पर्यावास जमीन की हालत पर निर्भर है। हमारा भविष्य जमीन की परिस्थिकीय की रक्षा से जुड़ा है फिर भी 8300 ज्ञात पशु नस्लों में से 8 प्रतिशत लुप्त हो चुकी है और 22 प्रतिशत होने को है। 1.3 हेक्टेयर वन हर वर्ष गायब हो रहे है, जबकि खुश्क भूमि के निरंतर विनाश के कारण 3.6 अरब हेक्टेयर इलाका मरूस्थल हो गया है। इस समय 2.6 अरब लोग सीधे तौर पर खेती पर निर्भर है, लेकिन 92 प्रतिशत खेती की जमीन मिट्टी के विनाश से सामान्य और गंभीर रूप से प्रभावित है। मानवीय गतिविधियों और जलवायु परिवर्तन के कारण वृक्षों का कटाओं और मरूस्थलीयकरण सतत विकास में एक बड़ी चुनौती पैदा करता है और इनसे गरीबी से संघर्ष में लाखों लोगों के जीवन और आजीविका पर असर डालता है।

16. शांति न्याय और सशक्त संस्थाएं (Peace & Justice Institution)

उद्देश्य–सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण एवं समावेशी समाजों को प्रोत्साहन, सबके लिए न्याय सुलभ कराना और सभी स्तरों पर असरदार जवाबदेह और समावेशी संस्थाओं की रचना करना

चुनौती–हिंसा शायद, दुनिया भर में देशों के विकास वृद्धि खुशहाली और अस्तित्व के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण और विनाशकारी चुनौती है। दुनिया के कुछ हिस्सों में सशस्त्र संघर्षो के कारण हताहतों की संख्या पढ़ रही है। जिसके कारण देशों के भीतर और सीमाओं के पार, बड़े पैमाने पर विस्थापन और उसके परिणाम स्वरूप विकट मानकीय संकट पैदा हो रहा है। जिसका विपरीत असर हमारे विकास प्रयासो के हर पहलू पर पड़ रहा है। हिंसा के अन्य रूप अपराध और यौन तथा जेंडर विशेष के साथ होने वाली हिंसा भी विश्व के लिए चुनौती है। युवाओं की स्थिति विशेष कर सोचनीय है। दुनिया भर में होने वाले कुल हत्याओं में से 43 प्रतिशत में 10 से 29 वर्ष की आयु के युवा शामिल होते है। और सहारा के दक्षिण अफ्रिकी देशों में 2010–12 में मानव तस्करी के 70 प्रतिशत शिकार बच्चे थे, किन्तु हिंसा और भी क्षद्म रूप ले सकती है। गैर जवाब देय कानूनी न्यायीक प्रणालियों की संस्थागत हिंसा और लोगों के उनके अधिकारों स्वतंत्रताओं से वंचित करना भी हिंसा और अन्याय के रूप है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चोरी और करवंचना के कारण विकाशसील देशों को प्रतिवर्ष 12.6 खरब अमेरिकी डालर के लगभग नुकसान होता है। जबकि इस राशि के उपयोग से बहुत बड़ी संख्या में लोगों को कम से कम 6 वर्ष तक 1.90 अमेरिकी डालर की अंतर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा से उपर उठाया जा सकता है।

17. लक्ष्य हेतु भागीदारी (Parternership for the Goals)

उद्देश्य–क्रियान्वयन के साधनों को सशक्त करना और सतत् विकास के लिए वैश्विक साझेदारी को नयी शक्ति देना।

चुनौती– यह वह चुनौती है जो अन्य सभी 16 लक्ष्यों के बारे में हमारे प्रयासों को एकजूट करती है। एक महत्वाकांक्षी और परस्पर जुड़े हुए वैश्विक विकास एजेंडा के लिए नयी वैश्विक भागीदारी आवश्यक है। इसमें विकास के लिए धन की व्यवस्था करना, लोगों को सूचना प्रौद्योगिकी नेटवर्क के जरिए जोड़ना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रवाह की व्यवस्था करना और आंकडो के संकलन एवं विश्लेषण को पुष्ट करना शामिल है। जब दुनिया वैश्विक विकास के लिए एकजुट हो रही है, तब भी 2014 में सरकारी विकास सहायता 135.2 अरब अमेरिकी डॉलर थी, तो तब तक का सबसे ऊँचा स्तर था। अब तक सिर्फ 07 देशो ने अपनी सफल राष्ट्रीय आय का 0.7 प्रतिशत सरकारी विकास सहायता के रूप में देने का संयुक्त राष्ट्र का लक्ष्य पूरा किया है। वैसे तो दुनिया भर के लोग भौतिक और डिजिटल नेटवर्क के जरीये गरीब आए है। लेकिन 4 अरब से अधिक लोग इंटरनेट का उपयोग नही करते और उनमें से 90 प्रतिशत विकासशील देशों में है। इंटरनेट के उपयोग में जेंडर भेद सबसे कम विकशीत देशों मे 29 प्रतिशत तक जाता है यह 17 महत्वाकांक्षी योजना लक्ष्य और इनके निशाने पर मौजूद जटिल चुनौतियों न तो क्षेत्रों के निश्चित दायरे में और न ही राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर सिमटे होते है।

विकास एक बहुआयामी संकल्पना है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं तकनीकी विकास समाहित है। यह समान के सभी वर्गो के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के प्रसार से पैदा हुई जागरूकता ने धर्म, जाति,भाषा और क्षेत्र के बंधन को कमजोर किया है। महिलाओं एवं समाज के पिछड़े समूहों की स्थिति मे सकारात्मक बदलाव आया है। वास्तव में 'सतत विकास' संसाधनों के उपयोग का एक आदर्श माडल है। इसमें विकास के तीन पहलु है– समाजिक समावेश, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण।

सतत् विकास के इस समस्त लक्ष्यों को प्राप्त करना असंभव नही तो कठिन अवश्य है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु चुनौतियों को स्वीकार कर ऐसा फ्रेमवर्क तैयार करना होगा जो सामाजिक आर्थिक एवं पर्यावरणीय पहुलओं का समाधान कर सके।

निष्कर्ष–

अतः सतत् विकास हेतु हमें ऐसी रणनीति अपनानी होगी जिसमें पर्यावरणीय हानि शून्य के स्तर पर हो तथा भावी पीढियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का भंडार शेष रह सके। भारत में नीति आयोग द्वारा सतत् विकास के लिए लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रयास प्रारंभ किये गये हैं जिसमें सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहें है जैसे– मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया, राष्ट्रीय ग्रमीण पेयजल कार्यक्रम, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आदि। किसी भी समाज के विकास में गरीबी एवं अशिक्षा दो मुख्य बाधक तत्व है इन कमियों को दूर कर हम अपने सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है बशर्ते कि हमारा प्रयास अनवरत बना रहें।

संदर्भ ग्रंथः–

1. योजनाः सतत विकास की अवधारणाः दीपंकर श्री ज्ञान पृष्ठ संख्या 31–33, अक्टूबर 2019
2. कुरूक्षेत्रः सतत् विकास के लिये नवाचार और उद्यमिता आर. रमणन, नमन अग्रवाल, पृष्ठ 10–14, नवंबर 2020
3. कुरूक्षेत्रः सतत् कृषि विकास में जैविक खेती की भूमिकाः डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. यशबीर सिंह शिवे, पृष्ठ 5–11 सितंबर 2019
4. यूनाइटेड नेशन्स इन इंडियाः सतत् विकास लक्ष्य
5. संधारणीय विकास लक्ष्यः नीति आयोग, नई दिल्ली
6. सतत् विकास लक्ष्यः सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार
7. सतत् धारणीय विकास के सूचक एवं पर्यावरण लेखाः डॉ. सी.एस. मिश्रा, डॉ. जीवनलाल भारद्वाज, पृष्ठ 235–241
8. सतत् विकास की परिभाषाः PDF WWW.drbrambedkarcollelge.ac.in